जयपुर सिटी: 217-2025 - 27

RNI No. RAJHIN/2007/19809

पाक्षिक

कायस्थ टुडे

राजस्थान सरकार से विज्ञापन के लिए मान्यता प्राप्त

आप पढ़ रहे हैं समाज का सबसे विश्वसनीय और नंबर 1 अखबार

डाक प्रेषण तिथि 3 और 18

kayasthatoday@gmail.com

वर्ष : 20 अंक : 14 | जयपुर, रविवार 01 नवम्बर 2026 | पृष्ठ : 04 / मूल्य: 10 रुपए



।। जय माता दी।।



दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

रोशनी का पर्व, रिश्तों की मिठास और नई उम्मीदों का उजास

दीपावली केवल दीप जलाने और खुशियां मनाने का त्योहार नहीं, बल्कि जीवन में सकारात्मकता, प्रेम, सद्भाव और नई उम्मीदों का प्रकाश फैलाने का पावन अवसर है। यह पर्व हमें याद दिलाता है कि अंधकार कितना भी गहरा क्यों न हो, विश्वास और संकल्प का एक छोटा-सा दीप भी उजाले की राह दिखा सकता है। दीपावली का वास्तविक संदेश भी यही है कि हम अपने भीतर की नकारात्मकता, अहंकार, ईर्ष्या और वैमनस्य को मिटाकर प्रेम, करुणा और मानवता का प्रकाश फैलाएं।



भारतीय संस्कृति में दीपावली का विशेष महत्व है। सदियों से यह पर्व हमारी परंपराओं, आस्थाओं और सामाजिक एकता का प्रतीक रहा है। घरों में जलते दीप, सजे हुए आंगन, रंगोली की खूबसूरती, मिठाइयों की मिठास और अपनों के साथ बिताए गए खुशनुमा पल इस त्योहार को खास बनाते हैं। मां लक्ष्मी और भगवान गणेश की पूजा के साथ हर परिवार सुख, शांति, समृद्धि और खुशहाली की कामना करता है। लेकिन इस पर्व की सार्थकता तभी है, जब हमारे जीवन में उजाला केवल घरों तक सीमित न रहे, बल्कि समाज के हर वर्ग तक पहुंचे।

आज के बदलते दौर में दीपावली का संदेश पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हो गया है। भागदौड़ भरी जिंदगी, बढ़ती प्रतिस्पर्धा और आपसी दूरियों के बीच हमें रिश्तों की अहमियत समझने की जरूरत है। त्योहार हमें अपनों के करीब आने, पुराने गिले-शिकवे भुलाने और नए सिरे से संबंधों में मिठास घोलने का अवसर देते हैं। हमें ऐसे दीप जलाने चाहिए, जो किसी के जीवन में उम्मीद जगाएं, किसी जरूरतमंद के चेहरे पर मुस्कान लाएं और समाज में भाईचारे की भावना को मजबूत करें।

दीपावली पर एक संकल्प यह भी होना चाहिए कि हम खुशियां मनाते समय पर्यावरण और सामाजिक जिम्मेदारियों को न भूलें। पटाखों के शोर और प्रदूषण के स्थान पर दीपों की रोशनी, प्रेम का संदेश और जरूरतमंदों की सहायता को प्राथमिकता दें। मिट्टी के दीप खरीदकर स्थानीय कारीगरों के श्रम का सम्मान करें और त्योहार की खुशियों में उन लोगों को भी शामिल करें, जिनके लिए छोटी-सी मदद भी बड़ी सौगात बन सकती है। एक जिम्मेदार समाचार माध्यम के रूप में 'कायस्थ टुडे' का भी प्रयास है कि समाज में सकारात्मक विचारों, जागरूकता, आपसी सद्भाव और रचनात्मक संवाद को बढ़ावा मिले। हमारा मानना है कि पत्रकारिता का उद्देश्य केवल खबरों को पाठकों तक पहुंचाना नहीं, बल्कि समाज को सही दिशा देने और जनहित के मुद्दों को मजबूती से उठाने में भी अपनी भूमिका निभाना है। दीपावली का यह अवसर हमें अपने इस दायित्व के प्रति और अधिक प्रतिबद्ध होने की प्रेरणा देता है। आइए, इस दीपोत्सव पर हम संकल्प लें कि अपने घर के साथ-साथ किसी जरूरतमंद के जीवन में भी खुशियों का दीप जलाएंगे। भेदभाव और नफरत के अंधेरों को मिटाकर प्रेम, विश्वास, समानता और भाईचारे का उजाला फैलाएंगे। यही दीपावली की सच्ची भावना और सबसे सुंदर उपहार है।

इसी मंगलकामना के साथ आप सभी पाठकों, शुभचिंतकों, सहयोगियों और समस्त देशवासियों को दीपावली की हार्दिक बधाई एवं अनंत शुभकामनाएं। मां लक्ष्मी और भगवान गणेश की कृपा से प्रत्येक घर में सुख-समृद्धि, शांति और खुशहाली का वास हो तथा आपका जीवन सदैव खुशियों के प्रकाश से आलोकित रहे।

योगिता माथुर, संपादक

परिचय सम्मेलन 20 दिसंबर को

जयपुर (कायस्थ टुडे)। श्री चित्रगुप्त नवयुवक समिति के बैनर तले कायस्थ समाज का युवक युवती परिचय सम्मेलन 20 दिसंबर रविवार को कायस्थों की बगीची, कल्याण जी का रास्ता,इन्द्रा बाजार ,जयपुर में और सामूहिक विवाह सम्मेलन 28 फरवरी रविवार को कायस्थों की बगीची भी होगा ।श्री चित्रगुप्त नवयुवक समिति के अध्यक्ष युगल किशोर नेहवारिया ने बताया कि अभी तक 06 जोड़ों ने सामूहिक विवाह सम्मेलन में शादी करने के लिए पंजीकरण कराया है ।

राजस्थान में सौर ऊर्जा के बढ़ते कदम, देश के ऊर्जा मानचित्र पर मजबूत होती पहचान

अनिल माथुर, स्वतंत्र पत्रकार





जयपुर (कायस्थ टुडे)। राजस्थान की पहचान अब केवल रेगिस्तान, पर्यटन और ऐतिहासिक विरासत तक सीमित नहीं रह गई है। प्रदेश की तेज धूप और विशाल भूभाग अब ऊर्जा उत्पादन की नई ताकत बन रहे हैं। सौर ऊर्जा के क्षेत्र में राजस्थान ने जिस तेजी से कदम बढ़ाए हैं, उससे प्रदेश देश के स्वच्छ ऊर्जा अभियान का प्रमुख केंद्र बनकर उभरा है। कभी गर्मी और पानी की कमी के लिए पहचाने जाने वाले राजस्थान की यही धूप अब आर्थिक विकास, निवेश और रोजगार के नए अवसर पैदा करने का माध्यम बन रही है। सौर ऊर्जा के बढ़ते संयंत्र प्रदेश की तस्वीर बदल रहे हैं और आने वाले वर्षों में ऊर्जा आत्मनिर्भरता की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

राजस्थान के लिए अक्टूबर 2026 के ताजा उपलब्ध आंकड़े इस बदलाव की तस्वीर पेश करते हैं। राज्य सरकार के निवेश एवं विकास पोर्टल के अनुसार 30 सितंबर 2026 तक प्रदेश की स्थापित सौर ऊर्जा क्षमता 45,121.44 मेगावाट यानी लगभग 45.12 गीगावाट पहुंच चुकी थी। वहीं कुल स्थापित अक्षय ऊर्जा क्षमता 51,595.50 मेगावाट दर्ज की गई। इस उपलब्धि के साथ राजस्थान देश में सौर ऊर्जा क्षमता के मामले में पहले स्थान पर बना हुआ है।

अक्टूबर 2026 के अंतिम सप्ताह में ऊर्जा मंत्री के हवाले से प्रकाशित जानकारी के अनुसार प्रदेश की कुल अक्षय ऊर्जा क्षमता लगभग 52 गीगावाट और सौर ऊर्जा क्षमता करीब 45 गीगावाट बताई गई। यह आंकड़ा राजस्थान में स्वच्छ ऊर्जा के तेजी से विस्तार को दर्शाता है।प्रदेश की इस सफलता के पीछे प्राकृतिक परिस्थितियों की भी बड़ी भूमिका है। राजस्थान में साल के लगभग 300 से 325 दिन अच्छी धूप उपलब्ध रहती है। यहां प्रतिदिन औसतन 6 से 7 किलोवाट घंटे प्रति वर्ग मीटर सौर विकिरण मिलता है। पश्चिमी राजस्थान के जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर, जोधपुर और फलोदी जैसे जिले बड़े सौर ऊर्जा संयंत्रों के लिए अनुकूल हैं। विशाल भूभाग और पर्याप्त धूप ने यहां निवेशकों की दिलचस्पी बढ़ाई है। राजस्थान में सौर ऊर्जा के विकास की चर्चा हो और भड़ला सोलर पार्क का उल्लेख न हो, ऐसा संभव नहीं है। जोधपुर जिले का भड़ला सोलर पार्क देश के प्रमुख सौर ऊर्जा केंद्रों में शामिल है। इसकी स्थापित क्षमता 2,245 मेगावाट है। अब बीकानेर का पूगल सोलर पार्क भी ऊर्जा क्षेत्र में नई पहचान बनाने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। यहां 2,450 मेगावाट सौर ऊर्जा उत्पादन के साथ 6,400 मेगावाट आवर बैटरी भंडारण क्षमता की एकीकृत परियोजना विकसित करने की योजना है। इससे दिन में उत्पादित बिजली को संग्रहित कर जरूरत के समय उपयोग करने में मदद मिलेगी।

सौर ऊर्जा का विस्तार अब बड़े औद्योगिक संयंत्रों तक सीमित नहीं है। प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना और पीएम-कुसुम योजना के माध्यम से आम लोगों तथा किसानों को भी इससे जोड़ने का प्रयास हो रहा है।अक्टूबर 2026 के अंतिम सप्ताह में प्रकाशित आंकड़ों के अनुसार राजस्थान में प्रधानमंत्री सूर्य घर योजना के तहत 3.55 लाख से अधिक घरों में रूफटॉप सोलर संयंत्र लगाए जा चुके हैं। वहीं पीएम-कुसुम योजना के घटक ए और सी के तहत 5,500 मेगावाट से अधिक क्षमता की विकेंद्रित सौर परियोजनाएं स्थापित हो चुकी हैं। इन परियोजनाओं से 3.75 लाख से अधिक किसानों को लाभ पहुंचने की जानकारी दी गई है। इससे किसानों को दिन में बिजली उपलब्ध कराने और कृषि क्षेत्र की ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने में मदद मिल रही है।

हालांकि सौर ऊर्जा के क्षेत्र में राजस्थान की उपलब्धियां उल्लेखनीय हैं, लेकिन इसके साथ कुछ चुनौतियां भी जुड़ी हुई हैं। सौर ऊर्जा का उत्पादन दिन में अधिक होता है, जबकि बिजली की मांग शाम और रात के समय भी बनी रहती है। ऐसे में बैटरी स्टोरेज और मजबूत बिजली ग्रिड की आवश्यकता बढ़ जाती है। इसके अलावा बड़े सौर पार्कों के लिए भूमि उपलब्ध कराना, बिजली का निर्बाध प्रसारण, स्थानीय पर्यावरण और पारंपरिक आजीविका पर पड़ने वाले प्रभावों का ध्यान रखना भी जरूरी है।

राज्य सरकार की एकीकृत स्वच्छ ऊर्जा नीति-2024 के तहत वर्ष 2029-30 तक 125 गीगावाट अक्षय ऊर्जा क्षमता विकसित करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इसमें 90 गीगावाट सौर ऊर्जा, 25 गीगावाट पवन एवं हाइब्रिड ऊर्जा तथा 10 गीगावाट भंडारण और जलविद्युत क्षमता शामिल है।

दीपोत्सव आपके जीवन में सुख, शांति, वैभव और उल्लास का संचार करे।
शुभ दीपावली



जनार्दन माथुर
राष्ट्रीय सचिव, अखिल भारतीय कायस्थ महासभा
201 सुमेर नगर जी विस्तार,
नियर नियर पिंक स्टार हॉस्पिटल,
न्यू सांगानेर रोड, जयपुर
मो. नं. 9414547585

कायस्थ जनरल सभा, जयपुर
दीपों का उजाला आपके जीवन में सुख, समृद्धि और खुशियों के अनगिनत रंग भर दे। शुभ दीपावली!


अवध बिहारी माथुर
अध्यक्ष


अनूप बरतरिया
चेयरमैन


अनिल माथुर
महासचिव


राधामोहन माथुर
कोषाध्यक्ष


देवेंद्र सक्सेना
'मधुकर' कोडिनेटर


डी.पी. सक्सेना
वरिष्ठ उपाध्यक्ष


गोपी मोहन माथुर
वरिष्ठ उपाध्यक्ष


योगेश नारायण माथुर
वरिष्ठ उपाध्यक्ष


मनीष माथुर
उप सचिव


राजेश माथुर
संयुक्त महासचिव संगठन

Sterling® HOSPITALS
स्टर्लिंग हॉस्पिटल्स, अहमदाबाद के
रोबोटिक जोड़ प्रत्यारोपण विशेषज्ञ से परामर्श का मौका
अब अजमेर में

12,000 से अधिक सफल जोड़ प्रत्यारोपण का अनुभव



डॉ. हिमांशु माथुर
MS (Orthopaedics)
एसोसिएट डायरेक्टर ऑर्थोपेडिक्स एवं ट्रॉमा

RGHS लाभार्थियों के लिए कैशलेस में जोड़ प्रत्यारोपण सर्जरी की सुविधा उपलब्ध

पंजीकरण हेतु संपर्क करे : 95290 03016
अधिक जानकारी के लिए 98 98 98 78 78

कायस्थ टुडे के विशिष्ट सदस्य



श्री एस के श्रीवास्तव
अहमदाबाद



श्री राज कुमार माथुर
शास्त्री नगर, जयपुर



श्री अनिल श्रीवास्तव
अहमदाबाद

दीपावली: रोशनी का पर्व ही नहीं, जीवन में खुशियों और सकारात्मकता का संदेश भी



भारत त्योहारों और परंपराओं का देश है, जहां हर पर्व अपने भीतर कोई न कोई संदेश, संस्कार और जीवन दर्शन समेटे हुए है। इन्हीं त्योहारों में दीपावली का स्थान सबसे खास और विशिष्ट है। दीपों की जगमगाहट, घरों की सजावट, रंगोली की खूबसूरती, मिठाइयों की मिठास और अपनों के साथ खुशियां बांटने का यह पर्व भारतीय संस्कृति की जीवंत पहचान है। दीपावली केवल एक धार्मिक उत्सव नहीं, बल्कि जीवन में आशा, उत्साह, सकारात्मकता और नई शुरुआत का प्रतीक भी है। यह पर्व हमें सिखाता है कि परिस्थितियां कितनी भी कठिन क्यों न हों, उम्मीद का एक छोटा-सा दीप भी अंधकार को चुनौती दे सकता है।

दीपावली का धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व अत्यंत व्यापक है। मान्यता है कि भगवान श्रीराम चौदह वर्ष के वनवास और रावण पर विजय प्राप्त करने के बाद माता सीता और लक्ष्मण के साथ अयोध्या लौटे थे। उनके स्वागत में अयोध्यावासियों ने दीप जलाकर पूरी नगरी को रोशन कर दिया था। तभी से दीपावली को विजय, उल्लास और प्रकाश के पर्व के रूप में मनाने की परंपरा प्रचलित हुई। वहीं धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इस दिन मां लक्ष्मी की पूजा-अर्चना की जाती है। भगवान गणेश के साथ मां लक्ष्मी की आराधना कर परिवार की सुख-समृद्धि, शांति और खुशहाली की कामना की जाती है।

दीपावली का सबसे बड़ा संदेश अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ना है। यहां अंधकार का अर्थ केवल रात का अंधेरा नहीं, बल्कि मनुष्य के भीतर मौजूद अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, लालच, नफरत और नकारात्मक सोच भी है। आज समाज को जितनी जरूरत घरों में दीप जलाने की है, उससे कहीं अधिक जरूरत मन के भीतर सद्भाव और संवेदनशीलता का प्रकाश फैलाने की है। यदि मनुष्य अपने व्यवहार में प्रेम, विनम्रता और सहयोग की भावना अपना ले तो समाज की अनेक समस्याओं का समाधान संभव है। दीपावली हमें आत्ममंथन करने और अपनी कमियों को दूर कर बेहतर इंसान बनने की प्रेरणा देती है।

बदलते समय के साथ दीपावली मनाने के तौर-तरीकों में भी काफी बदलाव आया है। पहले जहां मिट्टी के दीपक, घरों की पारंपरिक सजावट और परिवार के सामूहिक उत्सव का विशेष महत्व होता था, वहीं अब बाजारों में इलेक्ट्रॉनिक लाइटों, आकर्षक सजावटी वस्तुओं और आधुनिक उपहारों की भरमार दिखाई देती है। बाजारों में खरीदारी की रौनक, दुकानों की सजावट और ग्राहकों की चहल-पहल त्योहार के उत्साह को कई गुना बढ़ा देती है। व्यापारी वर्ग के लिए भी दीपावली विशेष महत्व रखती है। धनतेरस से शुरू होने वाली खरीदारी का सिलसिला दीपावली तक बाजारों में नई ऊर्जा भर देता है। सोने-चांदी, बर्तन, कपड़े, वाहन, इलेक्ट्रॉनिक्स और घरेलू उपयोग की वस्तुओं की खरीदारी को शुभ माना जाता है।

दीपावली आर्थिक गतिविधियों को भी गति प्रदान करती है। छोटे दुकानदारों, हस्तशिल्प कारीगरों, मिट्टी के दीपक बनाने वालों, मिठाई विक्रेताओं, फूल कारोबारियों और सजावट से जुड़े लोगों के लिए यह पर्व रोजगार और आय के नए अवसर लेकर आता है। ऐसे में हमारी जिम्मेदारी है कि त्योहार की खरीदारी करते समय स्थानीय व्यापारियों और छोटे कारोबारियों को प्राथमिकता दें। मिट्टी के दीपक खरीदकर कुम्हारों की मेहनत का सम्मान करें। स्थानीय उत्पादों को प्रोत्साहन देकर हम न केवल अपनी संस्कृति को संरक्षित कर सकते हैं, बल्कि आत्मनिर्भरता की भावना को भी मजबूत बना सकते हैं।

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में रिश्तों के बीच बढ़ती दूरियां भी एक बड़ी चुनौती बनती जा रही हैं। कामकाज, व्यस्तता और प्रतिस्पर्धा के कारण परिवार के सदस्यों के पास एक-दूसरे के लिए समय कम होता जा रहा है। ऐसे में दीपावली हमें अपनों के साथ समय बिताने, पुराने गिले-शिकवे भुलाने और रिश्तों में नई मिठास घोलने का अवसर देती है। किसी रूठे हुए व्यक्ति को मनाना, किसी जरूरतमंद की सहायता करना, बुजुर्गों का आशीर्वाद लेना और बच्चों के साथ खुशियां बांटना ही त्योहार की वास्तविक खूबसूरती है। त्योहार की सार्थकता महंगे उपहारों में नहीं, बल्कि उन भावनाओं में छिपी होती है, जो दिलों को एक-दूसरे से जोड़ती हैं।

दीपावली मनाते समय पर्यावरण और स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहना भी बेहद जरूरी है। पटाखों से निकलने वाला धुआं और तेज आवाज वायु एवं ध्वनि प्रदूषण बढ़ाते हैं। इसका असर बच्चों, बुजुर्गों और सांस संबंधी समस्याओं से परेशान लोगों पर विशेष रूप से पड़ता है। इसलिए हमें ऐसी दीपावली मनाने का संकल्प लेना चाहिए, जिसमें खुशियों की चमक हो, लेकिन प्रदूषण का अंधकार न हो। दीपों और रोशनी से घर सजाएं, पर्यावरण के अनुकूल सजावट अपनाएं और पटाखों के इस्तेमाल से बचें। स्वच्छ और सुरक्षित दीपावली ही स्वस्थ समाज की दिशा में सार्थक कदम हो सकती है।

इस पर्व का एक महत्वपूर्ण पक्ष सामाजिक समरसता भी है। दीपावली हमें जाति, वर्ग, भाषा और आर्थिक स्थिति के भेदभाव से ऊपर उठकर एक-दूसरे के साथ खुशियां बांटने की प्रेरणा देती है। समाज में ऐसे अनेक परिवार हैं, जिनके लिए त्योहार की खुशियां जुटाना भी कठिन होता है। यदि संपन्न लोग जरूरतमंद परिवारों के साथ मिठाइयां, कपड़े और जरूरी वस्तुएं साझा करें तो उनके जीवन में भी दीपावली का उजाला पहुंच सकता है। किसी गरीब बच्चे के चेहरे पर मुस्कान लाना, किसी अकेले बुजुर्ग के साथ कुछ समय बिताना या किसी श्रमिक परिवार की मदद करना भी दीपावली के उत्सव को सार्थक बना सकता है।

वास्तव में दीपावली केवल एक दिन का उत्सव नहीं, बल्कि जीवन को बेहतर बनाने का संदेश है। यह हमें सिखाती है कि प्रकाश बांटने से कभी कम नहीं होता, बल्कि और बढ़ता है। जरूरत इस बात की है कि दीपावली के दिन जलाए गए दीपों का उजाला हमारे विचारों और व्यवहार में भी दिखाई दे। हम अपने भीतर प्रेम, सद्भाव, ईमानदारी और मानवता के दीप जलाएं तथा समाज में सकारात्मकता का वातावरण बनाने में योगदान दें।

इस दीपावली पर हम केवल अपने घरों को ही नहीं, बल्कि अपने विचारों और रिश्तों को भी रोशन करें। नफरत के स्थान पर प्रेम, निराशा के स्थान पर उम्मीद और स्वार्थ के स्थान पर सहयोग को अपनाएं। यही दीपावली का वास्तविक संदेश है और यही इस पर्व की सबसे बड़ी सार्थकता भी है। दीपों का यह महापर्व प्रत्येक परिवार के जीवन में सुख, शांति, समृद्धि और खुशहाली लेकर आए, इसी मंगलकामना के साथ सभी को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं।

गोवर्धन पूजा : प्रकृति, पर्यावरण और लोक आस्था के संरक्षण का पर्व



भारतीय संस्कृति में त्योहार केवल धार्मिक आस्था और परंपराओं तक सीमित नहीं हैं, बल्कि इनके पीछे जीवन जीने की गहरी सीख और सामाजिक सरोकार भी छिपे हुए हैं। ऐसा ही एक महत्वपूर्ण पर्व है गोवर्धन पूजा, जिसे दीपावली के अगले दिन पूरे श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया जाता है। यह पर्व भगवान श्रीकृष्ण की गोवर्धन लीला की स्मृति में मनाया जाता है। गोवर्धन पूजा हमें प्रकृति के प्रति सम्मान, पर्यावरण संरक्षण, गौ-सेवा, अन्न के महत्व और सामूहिक सहयोग का संदेश देती है। बदलते दौर में जब पर्यावरण असंतुलन और प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन की चिंता बढ़ रही है, तब इस पर्व की प्रासंगिकता और भी अधिक बढ़ जाती है।

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार द्वापर युग में ब्रज क्षेत्र के लोग वर्षा के देवता इंद्र की पूजा किया करते थे। भगवान श्रीकृष्ण ने उन्हें समझाया कि मनुष्य के जीवन और आजीविका में पर्वत, वन, पशु-पक्षी, जल और प्रकृति का विशेष योगदान है। गोवर्धन पर्वत ब्रजवासियों को चारा, जल और जीवनयापन के अनेक साधन उपलब्ध कराता है, इसलिए उसकी पूजा और प्रकृति के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना अधिक महत्वपूर्ण है। श्रीकृष्ण की प्रेरणा से ब्रजवासियों ने गोवर्धन पर्वत की पूजा की। इससे क्रोधित होकर इंद्र ने मूसलाधार वर्षा शुरू कर दी। तब भगवान श्रीकृष्ण ने अपनी छोटी अंगुली पर गोवर्धन पर्वत उठाकर ब्रजवासियों और उनके पशुधन को वर्षा के प्रकोप से बचाया। अंततः इंद्र को अपनी भूल का एहसास हुआ और उन्होंने श्रीकृष्ण से क्षमा मांगी। तभी से गोवर्धन पूजा की परंपरा चली आ रही है। गोवर्धन पूजा का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष प्रकृति के प्रति मनुष्य की जिम्मेदारी को समझना है। पर्वत, नदियां, जंगल, जल और भूमि हमारे जीवन के आधार हैं। मनुष्य का अस्तित्व प्रकृति के संतुलन पर निर्भर करता है। आज विकास की दौड़ में जंगलों की कटाई, जल स्रोतों का अतिक्रमण, प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक उपयोग गंभीर समस्याएं बन चुके हैं। ऐसे समय में गोवर्धन पूजा हमें याद दिलाती है कि प्रकृति का सम्मान करना केवल धार्मिक आस्था नहीं, बल्कि जीवन की अनिवार्य आवश्यकता है। पर्वतों, पेड़-पौधों और जल स्रोतों का संरक्षण आने वाली पीढ़ियों के भविष्य को सुरक्षित करने का माध्यम है।

इस पर्व का एक महत्वपूर्ण संबंध गौ-संरक्षण और पशुधन से भी है। भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था में गाय और अन्य पशुओं का विशेष योगदान रहा है। खेती, दुग्ध उत्पादन और ग्रामीण आजीविका में पशुधन की भूमिका महत्वपूर्ण है। गोवर्धन पूजा के अवसर पर गायों और बैलों को स्नान कराया जाता है, उन्हें सजाया जाता है और उनकी पूजा की जाती है। यह परंपरा हमें पशुओं के प्रति संवेदनशीलता और उनके महत्व का एहसास कराती है। गौ-सेवा का वास्तविक अर्थ केवल पूजा-अर्चना तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि पशुओं के लिए उचित भोजन, पानी, चिकित्सा और सुरक्षित आश्रय की व्यवस्था करना भी हमारी जिम्मेदारी होनी चाहिए।

गोवर्धन पूजा को अन्नकूट पर्व के रूप में भी विशेष पहचान मिली हुई है। इस दिन भगवान श्रीकृष्ण को विभिन्न प्रकार के व्यंजनों और पकवानों का भोग लगाया जाता है। मंदिरों में अन्नकूट तैयार किया जाता है, जिसमें अनेक प्रकार की सब्जियां, अनाज, मिठाइयां और पारंपरिक पकवान शामिल होते हैं। इसके बाद प्रसाद के रूप में भक्तों को भोजन वितरित किया जाता है। अन्नकूट की परंपरा हमें अन्न के सम्मान और भोजन की महत्ता का संदेश देती है। आज भी समाज में ऐसे अनेक लोग हैं, जिन्हें पर्याप्त भोजन उपलब्ध नहीं हो पाता। ऐसे में त्योहार के अवसर पर जरूरतमंदों को भोजन कराना और खाद्य सामग्री का वितरण करना इस पर्व की भावना को सार्थक बनाता है।

देशभर में गोवर्धन पूजा अलग-अलग परंपराओं और रीति-रिवाजों के साथ मनाई जाती है। उत्तर भारत के ब्रज क्षेत्र में इस पर्व का विशेष महत्व है। मथुरा, वृंदावन और गोवर्धन में लाखों श्रद्धालु दर्शन और परिक्रमा के लिए पहुंचते हैं। श्रद्धालु गोवर्धन पर्वत की परिक्रमा कर भगवान श्रीकृष्ण से सुख-समृद्धि की कामना करते हैं। राजस्थान में भी गोवर्धन पूजा का विशेष उत्साह देखने को मिलता है। ग्रामीण क्षेत्रों में गोबर से गोवर्धन पर्वत की आकृति बनाकर उसकी पूजा की जाती है। घरों और मंदिरों में धार्मिक आयोजन होते हैं तथा परिवार के लोग एकत्रित होकर परंपराओं का निर्वहन करते हैं। आधुनिक जीवनशैली के बीच गोवर्धन पूजा का सामाजिक महत्व भी कम नहीं है। यह पर्व परिवार और समाज को एक साथ जोड़ने का अवसर प्रदान करता है। सामूहिक पूजा, अन्नकूट प्रसादी और धार्मिक आयोजनों के माध्यम से आपसी मेलजोल और भाईचारे की भावना मजबूत होती है। ऐसे आयोजन समाज में सहयोग, सेवा और सामूहिक जिम्मेदारी के संस्कार विकसित करते हैं। वास्तव में गोवर्धन पूजा प्रकृति और मानव जीवन के अटूट संबंध का उत्सव है। भगवान श्रीकृष्ण की गोवर्धन लीला हमें सिखाती है कि प्रकृति की रक्षा करना और उसके संसाधनों का सम्मान करना प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है। आइए, इस पावन पर्व पर हम प्रकृति संरक्षण, गौ-सेवा, अन्न के सम्मान और सामाजिक सद्भाव का संकल्प लें, ताकि आने वाली पीढ़ियों को भी स्वच्छ, सुरक्षित और समृद्ध पर्यावरण मिल सके। यही गोवर्धन पूजा का वास्तविक संदेश और इसकी सबसे बड़ी सार्थकता है।

भाई दूज: भाई-बहन के अटूट प्रेम, विश्वास और स्नेह का अनमोल पर्व

रिश्तों की मिठास और पारिवारिक एकता का प्रतीक है भाई दूज, बहन की दुआओं और भाई के स्नेह से मजबूत होता है जीवनभर का रिश्ता



भारतीय संस्कृति में त्योहार केवल उत्सव मनाने का माध्यम नहीं हैं, बल्कि ये रिश्तों को मजबूत बनाने, भावनाओं को अभिव्यक्त करने और पारिवारिक परंपराओं को जीवंत बनाए रखने का अवसर भी प्रदान करते हैं। ऐसा ही एक आत्मीय और भावनात्मक पर्व है भाई दूज। दीपावली के दो दिन बाद मनाया जाने वाला यह त्योहार भाई-बहन के अटूट प्रेम, विश्वास, स्नेह और समर्पण का प्रतीक है। इस दिन बहनें अपने भाइयों के माथे पर तिलक लगाकर उनकी लंबी आयु, सुख-समृद्धि और उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हैं। वहीं भाई अपनी बहनों की रक्षा, सम्मान और हर परिस्थिति में साथ निभाने का संकल्प लेते हैं।

भाई दूज को यम द्वितीया के नाम से भी जाना जाता है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार इस दिन यमराज अपनी बहन यमुना के घर पहुंचे थे। यमुना ने उनका आदर-सत्कार किया और माथे पर तिलक लगाकर उनके सुखद जीवन की कामना की। बहन के प्रेम और आतिथ्य से प्रसन्न होकर यमराज ने उन्हें वरदान दिया कि जो भाई इस दिन अपनी बहन के घर जाकर उसके हाथों से तिलक करवाएगा, उसे सुख-समृद्धि और दीर्घायु का आशीर्वाद प्राप्त होगा। तभी से भाई दूज मनाने की परंपरा चली आ रही है।

इस दिन सुबह से ही घरों में उत्सव का माहौल दिखाई देने लगता है। बहनें पूजा की थाली सजाती हैं, जिसमें रोली, अक्षत, दीपक, मिठाई और अन्य पूजन सामग्री रखी जाती है। शुभ मुहूर्त में भाई को आसन पर बैठाकर तिलक किया जाता है और आरती उतारी जाती है। इसके बाद मिठाई खिलाकर भाई की खुशहाली की कामना की जाती है। भाई भी बहनों को उपहार देकर उनके प्रति अपना प्रेम और सम्मान व्यक्त करते हैं। कई परिवारों में भाई अपनी बहनों के घर जाकर भोजन करते हैं और इस परंपरा को पूरे उत्साह के साथ निभाते हैं।

भाई दूज का महत्व केवल धार्मिक मान्यताओं तक सीमित नहीं है। यह पर्व हमें रिश्तों की वास्तविक अहमियत समझाता है। आज की व्यस्त जीवनशैली में जहां परिवार के सदस्यों के पास एक-दूसरे के लिए समय निकालना मुश्किल होता जा रहा है, वहीं ऐसे त्योहार अपनों के करीब आने का अवसर देते हैं। भाई-बहन का रिश्ता बचपन की शरारतों, छोटी-छोटी नोकझोंक, साझा यादों और एक-दूसरे के प्रति निस्वार्थ प्रेम से बना होता है। समय के साथ भले ही दोनों की जिम्मेदारियां और जीवन की राहें अलग हो जाएं, लेकिन भावनाओं का यह रिश्ता हमेशा मजबूत बना रहता है।

भाई दूज हमें यह भी संदेश देता है कि भाई-बहन का संबंध केवल एक दिन के तिलक और उपहार तक सीमित नहीं होना चाहिए। बहन का सम्मान, उसकी सुरक्षा, उसके सपनों और आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहन देना तथा हर परिस्थिति में उसका साथ निभाना भाई का वास्तविक दायित्व है। इसी तरह बहन का स्नेह और विश्वास परिवार को भावनात्मक मजबूती प्रदान करता है।

वास्तव में भाई दूज प्रेम, विश्वास और पारिवारिक एकता का उत्सव है। यह पर्व हमें सिखाता है कि जीवन की भागदौड़ में रिश्तों को कभी पीछे नहीं छोड़ना चाहिए। महंगे उपहारों से अधिक अनमोल अपनों का समय, उनका स्नेह और उनका साथ होता है। आइए, इस भाई दूज पर हम अपने रिश्तों में प्रेम और विश्वास की डोर को और मजबूत बनाएं तथा एक-दूसरे के सुख-दुख में साथ निभाने का संकल्प लें। यही इस पावन पर्व की सच्ची भावना और सबसे सुंदर संदेश है।

पटाखे चलाते समय बरतें सावधानी, खुशियों के त्योहार पर सुरक्षा से न करें समझौता



दीपावली खुशियों, उमंग और रोशनी का त्योहार है। इस पर्व पर घरों की सजावट, दीपों की जगमगाहट और आतिशबाजी उत्सव के उल्लास को और बढ़ा देती है। बच्चे हों या बड़े, पटाखे चलाने का उत्साह हर किसी में दिखाई देता है। लेकिन इस उत्साह के बीच थोड़ी-सी लापरवाही गंभीर हादसे का कारण बन सकती है। हर साल दीपावली के दौरान पटाखों से जलने, आंखों में चोट लगने और आग लगने की घटनाएं सामने आती हैं। ऐसे में जरूरी है कि त्योहार की खुशियां मनाते समय सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए। पटाखे चलाते समय सबसे पहले उनकी गुणवत्ता और सुरक्षा का ध्यान रखना चाहिए। हमेशा लाइसेंस प्राप्त और विश्वसनीय विक्रेताओं से ही पटाखे खरीदें। प्रतिबंधित या अवैध पटाखों से दूरी बनाए रखें। पटाखों को कभी भी घर के अंदर, बंद कमरे, रसोई या ज्वलनशील वस्तुओं के आसपास नहीं चलाना चाहिए। आतिशबाजी के लिए खुला स्थान चुनें, जहां आसपास बिजली के तार, वाहन, कपड़े या अन्य आग पकड़ने वाली वस्तुएं न हों। बच्चों को पटाखे चलाते समय अकेला बिल्कुल न छोड़ें। उनकी निगरानी के लिए किसी जिम्मेदार बड़े व्यक्ति का साथ होना जरूरी है। बच्चों को पटाखे चलाने के सही तरीके और संभावित खतरों के बारे में पहले ही समझाएं। रॉकेट जैसे पटाखों को हमेशा खुले आसमान की ओर सुरक्षित दिशा में ही छोड़ें। हाथ में रखकर पटाखे जलाने या जलते हुए पटाखे के पास झुककर देखने की गलती कभी न करें। पटाखे जलाते समय सूती कपड़े पहनना अधिक सुरक्षित रहता है। ढीले, सिंथेटिक और जल्दी आग पकड़ने वाले कपड़ों से बचना चाहिए। पटाखे जलाने के लिए लंबी अगरबत्ती या सुरक्षित दूरी से इस्तेमाल किया जाने वाला उपकरण उपयोग करें। पटाखा जलाने के बाद तुरंत उससे दूर हट जाएं। यदि पटाखा नहीं जलता है तो उसे दोबारा जलाने की कोशिश न करें और न ही उसके पास जाकर जांच करें। कुछ समय बाद पानी डालकर उसे सुरक्षित तरीके से निष्क्रिय करें। आतिशबाजी के दौरान अपने पास पानी से भरी बाल्टी, रेत और प्राथमिक उपचार का सामान जरूर रखें। किसी दुर्घटना या आग लगने की स्थिति में तुरंत सहायता लें। जलने पर प्रभावित स्थान को लगभग 20 मिनट तक साफ ठंडे बहते पानी के नीचे रखें।



कायस्थ टुडे में प्रकाशित आलेख में लेखक के विचार है। सम्पादक का इससे सरोकार नहीं है। सभी विवादों का न्यायक्षेत्र जयपुर होगा। ■ सम्पादक

युवाओं को राष्ट्र निर्माण से जोड़ रहे प्रधानमंत्री- मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा

कायस्थ टुडे

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि सरदार वल्लभ भाई पटेल ने अपने दृढ़ संकल्प, अदम्य इच्छाशक्ति और दूरदर्शिता से देश को एक सूत्र में पिरोने का कार्य किया था। हमारी भाषाएं-परम्पराएं अलग हो सकती हैं, लेकिन हमारी राष्ट्रीय पहचान एक है।

मुख्यमंत्री ने सरदार वल्लभ भाई पटेल की 151वीं जयंती पर जयपुर में आयोजित 'रन फॉर यूनिटी' को हरी झंडी दिखाकर रवाना करने के मौके पर सम्बोधित कर रहे थे । इस मौके पर केन्द्रीय शिक्षा, खाद्य एवं उपभोक्ता मामलात मंत्री प्रल्हाद जोशी भी मौजूद रहे ।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्माने कहा कि प्रधानमंत्री का मानना है कि सरदार पटेल के सपनों का सशक्त



भारत युवाओं के सहयोग से बन सकता है। इसलिए देश के युवाओं को माय भारत जैसे मंचों के माध्यम से राष्ट्र निर्माण से जोड़ा जा रहा है। स्टार्टअप इंडिया और मुद्रा योजना ने युवाओं को नौकरी खोजने वाले से नौकरी देने वाला बनाया है। वहीं, खेलो इंडिया और फिट इंडिया मूवमेंट के जरिए गांव-ढाणी की प्रतिभाएं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तिरंगा लहरा रही हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार हर नौजवान को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, पारदर्शी भर्तियां, आधुनिक खेल सुविधा और कौशल विकास के बेहतर अवसर उपलब्ध करवा रही है। युवा नीति, नई रोजगार नीति, राज्य कौशल नीति के जरिए भविष्य को सुदृढ़ करने का कार्य किया जा रहा है। प्रदेश में 410 परीक्षाएं पूरी पारदर्शिता के साथ संपन्न करवाकर 1 लाख 93 हजार युवाओं को सरकारी नियुक्तियां दी जा चुकी हैं। इसके अलावा 1 लाख 18 हजार भर्तियां प्रक्रियाधीन हैं और 70 हजार से अधिक पदों पर भर्ती प्रक्रिया जल्द ही शुरू की जाएगी। साथ ही, 5 लाख युवाओं को निजी क्षेत्र में रोजगार उपलब्ध करवाया गया है।

केन्द्रीय शिक्षा, खाद्य एवं उपभोक्ता मामलात मंत्री प्रल्हाद जोशी ने कहा कि आज हम जिस 'एक भारत' को देख रहे हैं, उसके पीछे सरदार पटेल के कुशल नेतृत्व और अथक परिश्रम का ऐतिहासिक योगदान है, जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में सरदार पटेल के 'एक भारत' के संकल्प को 'श्रेष्ठ भारत' के रूप में साकार करने का कार्य किया जा रहा है।

चित्रगुप्त पूजन: ज्ञान... न्याय और सदाचार का संदेश देता है यह पर्व

भारतीय संस्कृति में दीपावली का पर्व केवल धन, वैभव और खुशहाली की कामना तक सीमित नहीं है, बल्कि यह ज्ञान, कर्म, न्याय और सदाचार के महत्व को भी रेखांकित करता है। दीपावली के अवसर पर जहां मां लक्ष्मी और भगवान गणेश की पूजा-अर्चना की जाती है, वहीं कायस्थ समाज में भगवान चित्रगुप्त के पूजन का भी विशेष महत्व है। भगवान चित्रगुप्त को सृष्टि के समस्त जीवों के कर्मों का लेखा-जोखा रखने वाला और न्याय व्यवस्था का संरक्षक माना जाता है। उनके पूजन के माध्यम से ज्ञान, विवेक, ईमानदारी और अपने कर्तव्यों के प्रति निष्ठा का संकल्प लिया जाता है।

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार भगवान चित्रगुप्त का प्राकट्य ब्रह्माजी की काया से हुआ था। इसी कारण उनके वंशज कायस्थ कहलाए। मान्यता है कि भगवान चित्रगुप्त मनुष्यों के अच्छे और बुरे कर्मों का लेखा-जोखा रखते हैं तथा मृत्यु के पश्चात उनके कर्मों के आधार पर न्याय व्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनके हाथों में कलम और दवात को ज्ञान, लेखन, विवेक और कर्मों के हिसाब का प्रतीक माना जाता है। इसी वजह से कायस्थ समाज में कलम-दवात की पूजा की परंपरा सदियों से चली आ रही है।

दीपावली के दिन कायस्थ परिवारों में भगवान चित्रगुप्त की विशेष पूजा-अर्चना की जाती है। घरों और मंदिरों में पूजा स्थल सजाए जाते हैं। भगवान चित्रगुप्त की प्रतिमा या चित्र स्थापित कर पुष्प, रोली, अक्षत, मिठाई और दीप अर्पित किए जाते हैं। इसके साथ ही कलम, दवात, बहीखाता और पुस्तकों की पूजा की जाती है। कई परिवारों में नई लेखन सामग्री का शुभारंभ भी इसी दिन किया जाता है। व्यापारी वर्ग अपने बहीखातों और नए लेखा-जोखा की पूजा कर नए आर्थिक वर्ष के लिए शुभकामनाएं मांगता है।



चित्रगुप्त पूजन का महत्व केवल धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं है। यह पर्व व्यक्ति को अपने कर्मों के प्रति जवाबदेह बनने की प्रेरणा देता है। भगवान चित्रगुप्त की आराधना हमें याद दिलाती है कि मनुष्य का प्रत्येक कार्य महत्वपूर्ण है और उसके कर्म ही उसकी वास्तविक पहचान बनाते हैं। जीवन में सफलता केवल धन और पद से नहीं, बल्कि ईमानदारी, नैतिकता और अच्छे आचरण से प्राप्त होती है। कलम की पूजा का अर्थ भी ज्ञान, शिक्षा और सकारात्मक विचारों का सम्मान करना है।

कायस्थ समाज के लिए भगवान चित्रगुप्त केवल आराध्य देव नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान के प्रतीक भी हैं। देशभर में कायस्थ समाज के लोग इस अवसर पर सामूहिक पूजा, धार्मिक आयोजन और सामाजिक कार्यक्रम आयोजित करते हैं। इन आयोजनों के माध्यम से समाज में एकता, भाईचारे और सांस्कृतिक परंपराओं को मजबूती मिलती है। नई पीढ़ी को अपनी विरासत, इतिहास और धार्मिक मान्यताओं से जोड़ने का भी यह महत्वपूर्ण अवसर है।

आज के डिजिटल युग में जब लेखन और लेखा-जोखा का स्वरूप तेजी से बदल रहा है, तब भी कलम-दवात पूजन की परंपरा का महत्व कम नहीं हुआ है। यह हमें ज्ञान की शक्ति, सत्य की महत्ता और जिम्मेदारी के साथ अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने की सीख देती है।

वास्तव में भगवान चित्रगुप्त का पूजन आत्ममंथन और आत्मशुद्धि का पर्व है। यह हमें अपने विचारों और कर्मों को बेहतर बनाने तथा समाज के प्रति जिम्मेदार नागरिक बनने की प्रेरणा देता है। आइए, इस दीपावली पर भगवान चित्रगुप्त की आराधना के साथ ज्ञान, न्याय, सत्य और सदाचार के मार्ग पर चलने का संकल्प लें। यही चित्रगुप्त पूजन की वास्तविक सार्थकता और जीवन के लिए उनका सबसे बड़ा संदेश है।

जयपुर डायलॉग 2026: रोजगार देने वाला बन रहा है देश का युवा राज्यवर्धन सिंह

कायस्थ टुडे

जयपुर। देश का युवा रोजगार लेने वाला नहीं, देने वाला बन रहा है। बीते एक दशक में युवाओं के परिदृश्य में बड़ा बदलाव आया है। फिर चाहे बात खेलों की हो या तकनीक और रक्षा की। देश का युवा सनातन की ओर भी बढ़ता नजर आया है। यह कहना है युवा मामले एवं खेल मंत्री राज्यवर्धन सिंह राठौड़ का। वे शुक्रवार को यहां जेएलएन मार्ग स्थित होटल क्लार्क आमेर में तीन दिवसीय द जयपुर डायलॉग के 11वें सम्मेलन के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे। उद्घाटन सत्र के दौरान भारत को क्यों आगे बढ़ना चाहिए विषय पर औपचारिक संबोधन से अलग रहते हुए राठौड़ ने परिचर्चा में भाग लेते हुए जयपुर डायलॉग के संस्थापक अध्यक्ष एवं पूर्व वरिष्ठ नौकरशाह संजय दीक्षित के साथ विभिन्न विषयों पर संवाद किया। कर्नल राज्यवर्धन राठौड़



ने ऑपरेशन सिंदूर, देश में विपक्ष की भूमिका, कॉकरोच युवा पीढ़ी के माध्यम से विपक्षी आंदोलन को हवा देने सहित खेल के क्षेत्र में युवाओं को योगदान जैसे विषयों का प्रभावी ढंग से जवाब दिया। राठौड़ ने कहा कि युवा हर क्षेत्र में देश निर्माण में जुटा हुआ है। विपक्षी दल आंदोलन के माध्यम से राजनीति चमकाना चाहते हैं। देश के चुनाव आयुक्त और एसआईआर के बारे में खुलकर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि सन 1952 से अब तक वह 12 बार देश में एसआईआर हुआ, जिसमें से 10 बार कांग्रेस के समय में हुआ। यह चुनाव आयोग का काम है सरकार का नहीं। जहां-जहां दशकों से कांग्रेस सरकार नहीं है वहां खूब हल्ला मचाया गया। जहांगीर कांग्रेस हारी वहां सवाल उठाए जाते हैं। लेकिन यह बीजेपी का सौभाग्य की देश के विपक्ष में राहुल गांधी हैं। देश की उपलब्धि से कांग्रेस खुश नहीं है। इस दौरान ओमेंद्र रत्नू और जय आहूजा की पुस्तक पाकिस्तान के हिंदू व सिख एक अनवरत नरसंहार का विमोचन भी किया गया। इसके अलावा अन्य सत्रों में अमि गणात्रा की पुस्तक द वाइस एंड द लेक आफ रीडल्स और शांतनु गुप्त की बुलडोजर बाबा का भी विमोचन किया गया।

संजय दीक्षित के अनुसार तीन दिवसीय 11वे सम्मेलन में देश-विदेश के 80 से अधिक प्रख्यात वक्ता, रक्षा विश्लेषक, विधि विशेषज्ञ, इतिहासकार, मीडिया दिग्गज और नीति-निर्माता भारत के भविष्य की दिशा पर मंथन किया ।उन्होने कहा कि सम्मेलन के मूल भावः धर्मयुद्ध – द बैटल फॉर भारत के बारे में दीक्षित ने बताया कि वर्तमान वैश्विक उथल-पुथल और आंतरिक वैचारिक संघर्ष के इस दौर में "धर्मयुद्ध - द बैटल फॉर भारत" केवल एक विषय नहीं, बल्कि भारत की अस्मिता, वैचारिक संप्रभुता और सांस्कृतिक पुनरुत्थान की लड़ाई है।

अन्नकूट : अन्न के सम्मान, समर्पण और सामाजिक समरसता का महापर्व

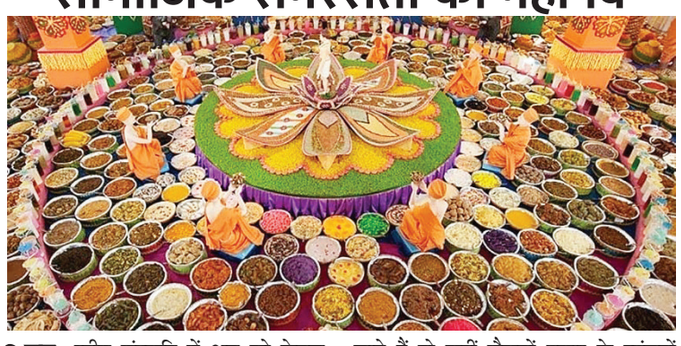

भारतीय संस्कृति में अन्न को केवल भोजन नहीं, बल्कि जीवन का आधार और ईश्वर का प्रसाद माना गया है। इसी आस्था, श्रद्धा और समर्पण का सुंदर स्वरूप है अन्नकूट महोत्सव। दीपावली के अगले दिन गोवर्धन पूजा के अवसर पर मनाया जाने वाला यह पर्व धार्मिक उल्लास के साथ सामाजिक एकता, अन्न के सम्मान और प्रकृति के प्रति कृतज्ञता का संदेश देता है। इस दिन मंदिरों और घरों में भगवान श्रीकृष्ण को विभिन्न प्रकार के पकवानों और व्यंजनों का भोग लगाया जाता है। इसके बाद प्रसाद को श्रद्धालुओं में वितरित किया जाता है।

अन्नकूट शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है, अन्न और कूट। इसका भावार्थ है विभिन्न प्रकार के अन्न और व्यंजनों का विशाल समूह। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार भगवान श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पर्वत उठाकर ब्रजवासियों को इंद्र के प्रकोप से बचाया था। इसके बाद ब्रजवासियों ने भगवान श्रीकृष्ण के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए अनेक प्रकार के पकवान तैयार कर उन्हें भोग लगाया। इसी परंपरा ने आगे चलकर अन्नकूट महोत्सव का स्वरूप ग्रहण किया। तभी से गोवर्धन पूजा के दिन अन्नकूट बनाने और भगवान को अर्पित करने की परंपरा चली आ रही है।

अन्नकूट महोत्सव के अवसर पर मंदिरों में विशेष सजावट की जाती है। भगवान श्रीकृष्ण और गिरिराज महाराज का आकर्षक श्रृंगार किया जाता है। कहीं छप्पन भोग सजाए जाते हैं तो कहीं सैकड़ों प्रकार के व्यंजनों की विशाल थाली तैयार की जाती है। इसमें विभिन्न प्रकार की सब्जियां, दालें, चावल, पूड़ी, कचौरी, मिठाइयां और अन्य पारंपरिक पकवान शामिल होते हैं। श्रद्धालु पूरे उत्साह और भक्ति भाव से इस आयोजन में भाग लेते हैं। मंदिरों में भजन-कीर्तन और धार्मिक कार्यक्रमों से वातावरण भक्तिमय हो जाता है।

राजस्थान सहित देश के विभिन्न हिस्सों में अन्नकूट महोत्सव विशेष श्रद्धा के साथ मनाया जाता है। जयपुर, नाथद्वारा, वृंदावन, मथुरा और अन्य धार्मिक स्थलों के मंदिरों में इस अवसर पर विशेष आयोजन होते हैं। श्रद्धालुओं की भीड़ भगवान के दर्शन और अन्नकूट प्रसादी प्राप्त करने के लिए उमड़ती है। कई स्थानों पर सामूहिक रूप से प्रसादी तैयार की जाती है और सभी वर्गों के लोगों को प्रेमपूर्वक भोजन कराया जाता है। अन्नकूट का महत्व केवल धार्मिक परंपरा तक सीमित नहीं है। यह पर्व हमें अन्न के महत्व को समझने और भोजन की बर्बादी रोकने की प्रेरणा देता है। आज भी समाज में अनेक ऐसे परिवार हैं, जिन्हें पर्याप्त भोजन उपलब्ध नहीं हो पाता। ऐसे में अन्नकूट का वास्तविक संदेश तभी सार्थक होगा, जब हम जरूरतमंदों तक भोजन पहुंचाने का संकल्प लें। किसी भूखे को भोजन कराना, जरूरतमंद परिवार की सहायता करना और अन्न का सम्मान करना इस पर्व की मूल भावना है।यह महोत्सव सामाजिक समरसता और सामूहिक सहयोग का भी प्रतीक है।

प्रधानमंत्री ने सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की



कायस्थ टुडे

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भारत के 'लौह पुरुष' और अखंड भारत के निर्माता सरदार वल्लभभाई पटेल को उनकी जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की।प्रधानमंत्री ने कहा कि सरदार पटेल ने अपना जीवन एक सशक्त, समृद्ध और समर्थ भारत के निर्माण के लिए समर्पित कर दिया था। उनका यह योगदान एक विकसित और आत्मनिर्भर भारत बनाने के प्रयासों में आज भी एक बड़ी प्रेरणा बना हुआ है।

प्रधानमंत्री ने 'X' पर पोस्ट कियाः अखंड भारत के प्रणेता देश के लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल को उनकी जयंती पर सादर नमन। उन्होंने एक सशक्त, समृद्ध और समर्थ भारत के निर्माण के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। मां भारती की सेवा में उनका त्याग और समर्पण विकसित एवं आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के लिए बहुत बड़ा प्रेरणास्रोत है।

अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में प्रदेश को मिलेगा राष्ट्रीय सम्मान

कायस्थ टुडे

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राजस्थान ने अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में एक और बड़ी उपलब्धि हासिल की है। नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय की ओर से व पावर फाइनेंस कॉर्पोरेशन के सहयोग से विकसित नवीकरणीय ऊर्जा राज्य मूल्यांकन तंत्र के तहत राजस्थान ने देश के सर्वश्रेष्ठ राज्यों में स्थान हासिल किया है। इस उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए 5 नवंबर को नई दिल्ली में उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन राज्य को सम्मानित करेंगे।

राजस्थान सरकार
राष्ट्र की एकता और अखंडता के शिल्पी,
लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल जी
की जन्मशति पर कोटि-कोटि नमन



राष्ट्रीय एकता दिवस
31 अक्टूबर 2026
की हार्दिक शुभकामनाएं
लौहपुरुष सरदार पटेल जी ने अपने अटूट संकल्प और दृढ़ इच्छाशक्ति से भारत की एकता की नींव रखी। आज का राष्ट्रीय एकता पर्व हमें उनके आदर्शों पर चलने और संकल्प दोहराने का अवसर देता है।
भजनलाल शर्मा, मुख्यमंत्री
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान
राजस्थान संवाद

कायस्थ टुडे के अति विशिष्ट, विशिष्ट या साधारण सदस्य बनकर चित्रांश समाज का मुखपत्र बनाने एवं चित्रांश समाज को मजबूती देने में सहयोग करें।
अति विशिष्ट सदसय अपना फोटो अवश्य भेजें। सम्पर्क करें : 0141-2396979, 9772781450

दिखावे और अनावश्यक खरीदारी के चक्कर में न बिगाड़ें बजट

दीपावली खुशियों, रोशनी और समृद्धि का त्योहार है। इस पर्व का इंतजार हर परिवार को पूरे साल रहता है। घरों की सजावट, नए कपड़ों की खरीदारी, मिठाइयां, उपहार और बाजारों की रौनक दीपावली के उत्साह को दोगुना कर देती है। लेकिन त्योहार की खुशियों के बीच एक बड़ी चिंता भी सामने आने लगी है, वह है अनावश्यक खर्च और दिखावे की बढ़ती प्रवृत्ति। दूसरों से बेहतर दिखने और अपनी आर्थिक हैसियत का प्रदर्शन करने की होड़ में कई परिवार अपनी सामर्थ्य से अधिक खर्च कर बैठते हैं। नतीजा यह होता है कि दीपावली की चमक खत्म होते ही उन्हें आर्थिक परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

आज बाजार में उपभोक्तावाद का प्रभाव तेजी से बढ़ रहा है। ऑनलाइन शॉपिंग, आकर्षक विज्ञापन, डिस्काउंट ऑफर और क्रेडिट कार्ड की सुविधाएं लोगों को जरूरत से ज्यादा खरीदारी के लिए प्रेरित करती हैं। कई बार व्यक्ति ऐसी वस्तुएं भी खरीद लेता है, जिनकी वास्तव में कोई आवश्यकता नहीं होती। महंगे कपड़े, इलेक्ट्रॉनिक सामान, सजावटी वस्तुएं और महंगे उपहार खरीदने की होड़ में बजट बिगड़ जाता है। कई परिवार केवल सामाजिक प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए कर्ज लेकर त्योहार मनाते हैं। यह प्रवृत्ति भविष्य में आर्थिक संकट का कारण बन सकती है।



दीपावली का वास्तविक अर्थ धन का प्रदर्शन करना नहीं, बल्कि घर-परिवार में सुख, शांति और समृद्धि लाना है। मां लक्ष्मी की पूजा के इस पर्व पर हमें आर्थिक अनुशासन का भी संकल्प लेना चाहिए। सबसे पहले त्योहार के लिए एक निश्चित बजट तय करना जरूरी है। घर की सजावट, कपड़े, मिठाइयां, उपहार और अन्य आवश्यक खर्चों की सूची बनाकर उसी के अनुसार खरीदारी करनी चाहिए। केवल छूट या आकर्षक ऑफर देखकर सामान खरीदने से बचना चाहिए। याद रखें, जो पैसा अनावश्यक वस्तुओं पर खर्च होता है, वही पैसा भविष्य की जरूरतों में काम आ सकता है। त्योहार पर उपहार देने की परंपरा हमारी संस्कृति का हिस्सा है, लेकिन उपहार की कीमत से अधिक उसमें छिपी भावना का महत्व होता है। अपनों को महंगे उपहार देने के बजाय उपयोगी और बजट के अनुरूप चीजें दी जा सकती हैं। इसी तरह घर की सजावट पर भी जरूरत से ज्यादा खर्च करने की बजाय पारंपरिक दीपक, फूलों और साधारण सजावटी वस्तुओं का इस्तेमाल किया जा सकता है। इससे त्योहार की सुंदरता भी बनी रहेगी और आर्थिक बोझ भी नहीं बढ़ेगा।

त्योहार के दौरान क्रेडिट कार्ड और आसान किस्तों के लालच से भी सावधान रहने की जरूरत है। खरीदारी से पहले अपनी आय, बचत और भविष्य की जिम्मेदारियों को ध्यान में रखना चाहिए। बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य, घर के जरूरी खर्च और आपातकालीन जरूरतों के लिए रखी गई बचत को त्योहार के नाम पर खर्च करना समझदारी नहीं है। दीपावली का त्योहार छोटे व्यापारियों, कारीगरों और स्थानीय बाजारों के लिए भी महत्वपूर्ण होता है। स्थानीय दुकानदारों से जरूरत के अनुसार खरीदारी करके हम उनके रोजगार और कारोबार को बढ़ावा दे सकते हैं। इससे त्योहार की खुशियां समाज के हर वर्ग तक पहुंचेंगी। वास्तव में दीपावली की खुशियां महंगे सामान और दिखावे में नहीं, बल्कि परिवार के साथ, अपनों के स्नेह और मन की संतुष्टि में छिपी हैं। आर्थिक समझदारी से मनाया गया त्योहार ही लंबे समय तक खुशियां दे सकता है। इसलिए इस दीपावली संकल्प लें कि अनावश्यक खर्च नहीं करेंगे, कर्ज लेकर दिखावा नहीं करेंगे और अपनी बचत को सुरक्षित रखेंगे। क्योंकि दीपावली का असली उजाला घर की रोशनी में नहीं, बल्कि परिवार की आर्थिक खुशहाली और सुरक्षित भविष्य में है।

15 नवम्बर को दीपावली मिलन एवं अन्नकूट पंगत प्रसादी

कायस्थ टुडे

जयपुर। कायस्थ समाज सेवा संस्थान, श्री चित्रगुप्त ट्रस्ट एवं श्री चित्रगुप्त क्लब के संयुक्त तत्वावधान में 15/नवम्बर रविवार को दीपावली मिलन एवं अन्नकूट पंगत प्रसादी कार्यक्रम आयोजित किया गया हैं। चित्रांशजन परिवार सहित आंमत्रित है।

सामूहिक करवा चौथ उद्यापन श्रद्धा एवं उल्लास के साथ सम्पन्न

कायस्थ टुडे

उदयपुर। श्री चित्रगुप्त सभा माथुर समाज की ओर से सेक्टर-4 स्थित समाज भवन में सामूहिक करवा चौथ उद्यापन का आयोजन बड़ी श्रद्धा, भक्ति एवं उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर समाज की सात महिलाओं ने विधि-विधान एवं पारंपरिक रीति-रिवाजों के अनुसार करवा चौथ का उद्यापन किया।



उद्यापन के दौरान महिलाओं ने विधिवत पूजा-अर्चना कर भगवान एवं चंद्रमा को अर्घ्य अर्पित किया तथा अपने सुहाग की दीर्घायु, उत्तम स्वास्थ्य एवं परिवार की सुख-समृद्धि की मंगलकामना की। कार्यक्रम में समाज के बड़ी संख्या में सदस्यों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता निभाई और धार्मिक आयोजन का पुण्य लाभ प्राप्त किया।उद्यापन करने वाली महिलाओं में सुनीता (रविन्द्र), रीना (रघुनाथ), संतोष (विष्णु), नीरू(चंद्रेश), नीलिमा (महेंद्र) प्रियंका (प्रतीक) एवं दीपिका (आशीष) शामिल थीं।

समाज की सामाजिक एवं सांस्कृतिक सचिव योगिता माथुर ने उद्यापनकर्ता महिलाओं के साथ समन्वय स्थापित कर कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की तथा आयोजन को सफलतापूर्वक सम्पन्न करवाया।

कार्यक्रम के पश्चात उद्यापनकर्ता महिलाओं की ओर से समाजजनों के लिए स्नेह भोज का आयोजन किया गया, जिसमें उपस्थित सभी सदस्यों ने पारिवारिक आत्मीयता एवं सौहार्द के साथ सहभागिता की।इस अवसर पर समाज की कार्यकारिणी एवं मनोनीत सदस्यों ने आयोजन से जुड़ी विभिन्न व्यवस्थाओं का दायित्व निभाते हुए कार्यक्रम को सफल बनाने में महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया ।



धूमधाम से मनाया डांडिया व गरबा उत्सव

जयपुर (कायस्थ टुडे)। कायस्थ सभा प्रताप नगर सोसायटी के तत्वावधान में पिंक सिटी हेरिटेज चेतक मार्ग में डांडिया व गरबा उत्सव मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि दीप प्रकाश जी माथुर (आरएएस सेवानिवृत्त) ने दुर्गा सरस्वतीऔ भगवान चित्रगुप्त जी का पूजन व दीप प्रज्वलित कर आरती कर के डांडिया व गरबा उत्सव की शुभारंभ किया। सभा के अध्यक्ष अवध बिहारी माथुर ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया। कार्यक्रम में जुगल किशोर माथुर, जगत माथुर, नवनीत, संजय भटनागर आलोक, राकेश, मनीष, निशा, राधिका, विजय लक्ष्मी, पूजा, रेणु, नीता, निशा सेक्टर 19 नीलप्रभा, गरीमा इस शुभ अवसर पर हर्ष और उल्लास के साथ डांडिया नृत्य किया और धूमधाम से उत्सव मनाया।

कायस्थ सभा का डांडिया महोत्सव

जयपुर, कायस्थ टुडे । कायस्थ सभा जयपुर पश्चिम के द्वारा खातीपुरा रोड स्थित फतेह निवास में डांडिया महोत्सव का कार्यक्रम किया गया । इस कार्यक्रम में सैकड़ो लोगों ने शिरकत की इस मौके पर

म्यूजिकल चेयर, और कई मनोरंजक गेम खेले गए,और सभी ने स्वादिष्ट व्यंजनों का आनंद लिया

कार्यक्रम के पश्चात लकी ड्रॉ उपस्थित बच्चों द्वारा खोला गया इसमें प्रथम शिप्रा द्वितीय निकिता तृतीय शिवांश को पुरस्कार दिए गए सचिव योगेश माथुर, और संयुक्त सचिव मुकेश दत माथुर ने बताया इस मौके पर

बेस्ट डांसर इंदू भटनागर और बेस्ट कपल भारती रितेश दत्त को भी योगेश भटनागर कार्यकारी अध्यक्ष द्वारा पुरस्कार दिया गया और साथ ही सभी युगल प्रतिभागियों को मुकेश दत्त माथुर स्नेहलता माथुर ने मोमेंट दिए गए। कार्यक्रम का संचालन हर्ष माथुर ने किया ।

पत्रकार वैभव माथुर के उपन्यास का विमोचन



कायस्थ टुडे

जयपुर। अभिनेता गजराज राव ने असिस्टेंट एडिटर वैभव माथुर के पहले उपन्यास मंदबुद्धि का विमोचन किया। इस मौके पर दैनिक भाष्कर के स्टेट एडिटर(ईएमएम) मुकेश माथुर और स्टेट एडिटर किरण राजपुरोहित मौजूद रहे ।

उपन्यास मंदबुद्धि एक लड़की की कहानी है, जो जन्म से लेकर 22 साल तक कोमा में रही। जिसे दुनिया के तौर-तरीके समझ नहीं आते। उसे नहीं पता समाज में लड़कियों के लिए अलग नियम हैं। लड़की को लड़कों से कम आंका जाता है।

वो समाज के बनाए हर नियम को तर्क और विवेक की कसौटी पर परखती है। उपन्यास एक जरूरी सवाल उठाता है- क्या जो स्त्री दुनिया के बनाए नियमों को नहीं समझती, वह सचमुच मंदबुद्धि है, या दुनिया ही उसे समझने में नाकाम है?

रोशनी का यह पर्व आपके जीवन में सफलता और सौभाग्य का नया सवेरा लेकर आए।

शुभ दीपावली!

स्थापित 2005 पंजीयन संख्या 726/06

कायस्थ समाज सेवा संस्थान, जयपुर (पंजीकृत)

पदाधिकारी

अनिल माथुर अध्यक्ष
एम बी माथुर महासचिव
नन्द बिहारी माथुर उपाध्यक्ष
नितेंद्र माथुर उप सचिव
राधा मोहन माथुर कोषाध्यक्ष

कार्यकारणी सदस्य

- राजेश माथुर (हेलक्या)
- राकेश दत्त
- धर्मेंद्र माथुर
- जयदीप माथुर
- प्रवीण माथुर
- पुरुषोत्तम माथुर (दरोगा)
- शरद नारायण माथुर
- दीपक माथुर
- मुकेश माथुर
- नवीन माथुर
- डॉ. अमित माथुर

संस्थान द्वारा चित्रांश बन्धुओं के हितार्थ सामाजिक धार्मिक एवं सांस्कृतिक रचनात्मक कार्य किये जा रहे हैं-

- 21 वर्षों से दीपावली मिलन एवं अन्न कूट पंगत प्रसादी कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है।
- 17 वर्षों से स्वर्गीय सुश्री शिखा माथुर की स्मृति में रक्तदान एवं चिकित्सा शिविर का आयोजन।
- समाज के कलाकारों की स्मृति में संगीत संध्या का आयोजन करना, संस्थान 20 वर्षों से पार्श्व गायक मुकेश चन्द्र माथुर की स्मृति में मुकेश नाईट श्रृद्धांजलि के रूप में आयोजित कर रहा है।
- श्री चित्रगुप्त जी एवं समाज के महापुरुषों की जयंती तथा राष्ट्रीय पर्व का आयोजन।
- वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन।
- समाज की अन्य कार्यरत संस्थाओं से सामंजस्य कर आयोजित कार्यक्रमों में सहभागिता।


अनिल माथुर अध्यक्ष


एम बी माथुर महासचिव


नन्द बिहारी माथुर उपाध्यक्ष


नितेंद्र माथुर उप सचिव


राधा मोहन माथुर कोषाध्यक्ष


राजेश माथुर (हेलक्या)


राकेश दत्त


धर्मेंद्र माथुर


जयदीप माथुर


प्रवीण माथुर


पुरुषोत्तम माथुर (दरोगा)


शरद नारायण माथुर


दीपक माथुर


मुकेश माथुर


नवीन माथुर


डॉ. अमित माथुर

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं **मुद्रक योगिता माथुर** द्वारा 90/132, आशीर्वाद, अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर से प्रकाशित एवं **अम्बर आफसेट प्रा. लि.,** डीएल टावर, 3 संस्थानिक क्षेत्र, जवाहरलाल नेहरू मार्ग, जयपुर से मुद्रित
संपादकः योगिता माथुर (पीआरबी एक्ट के तहत कायस्थ टुडे में प्रकाशित सामग्री के लिए उत्तदायित्व)